विचार बिन्दु

सज्जनों की रीति यह है कि कोई अगर उनसे कुछ मांगे तो वे मुख से कुछ न कहकर, काम पूरा करके ही उत्तर देते हैं। –कालिदास

देश एवं प्रदेशों में पेंशन बचाओ आंदोलनों की अपरिहार्यता

राजकीय एवं अन्य पेंशन धारकों को पेंशन मिलना अति आवश्यक है, यह उनके सेवानिवृत पश्चात् एक सम्मानपूर्वक जीवन निर्वाह का सबसे बिश्वसनीय साधन होता है। रिटायरमेंट के पश्चात् कर्मी को पता नहीं कितने दिन जीवित रहना है और कितने दिन उसकी पत्नी को? ऐसी असाधारण परिस्तिथि में पूर्व की सरकारों ने अपने कर्मी को पेंशन देने का प्रावधान किया, यह सिलसीला ब्रिटिश हुकूमत में तो था ही, संभवत: उससे पहले मुग़ल कल में भी प्रचिलित हो? पेंशनकर्मी को उसके द्वारा दी गयी सेवाओं में योगदान के फलस्वरूप अर्जित विकास (भौतिक, सामाजिक, व् विद्या प्रचार व् प्रसार आदि) के एवज में दी जाती है।

30 से 35 वर्ष के कार्य काल का आंकलन सांख्यकीय मापदंडों से करना दुष्कर है अत: सरकारों ने पेंशन निर्धारण के लिए काफी विचार और मंथन करके कुछ नियम निर्धारित किये जिनमे समय-समय पर स्तिथि के अनुसार सुधारकर बदलाव भी किया जाता रहा। मोटे तौर पर वर्तमान में कर्मी को संतोषजनक सेवा के उपरांत आखिरी वेतन का आधा अंश (5 0 प्रतिशत) पेंशन देय होती है सेवा काल में निर्धारित अवधि में कमी होने पर पेंशन भी अनुपातिक हिसाब से कम निर्धारित होती है, इसके ऊपर मंहगाई भत्ता नियम के अनुसार और जुड़ जाता है, इस प्रकार कर्मी को अपने शेष जीवन निर्वाह के लिए एक संतोषजनक राशि प्रतिमाह उपलब्ध होती रहती है। कर्मी की मृत्यु होने पर उसकी पत्नी को शेष जीवन में पारिवारिक पेंशन मिलने का प्रावधान किया हुआ है, जो मूल पेंशन का लगभग 30 प्रतिशत होता है। इस प्रकार सामाजिक सिक्योरिटी की दृष्टि से यह अनुकूल ही है।

एकल परिवारों के चलते यदि ये व्यवस्था न हो तो बुजुर्ग किसके आगे हाथ फैलाएं? उधार लेकर, घर का सामान बेचकर या एक-दो घर झाड़ू-बर्तन सफाई और विकट स्तिथि में भीख मांग कर जीवन काटना पड़ता है। कुछ समय पूर्व तक तो यह सब कुछ ठीक ही चल रहा था परतु 2004 से केंद्र सरकार ने नयी पेंशन योजना लागू कर दी, जिस पर कोई सम्बाद अथवा बहस नहीं हुयी, फलस्वरूप सरकार द्वारा सरसब्ज बाग़ दिखाने से नयी पेंशन योजना का उस समय कोई प्रतिरोध नहीं हुआ। जिन संस्थानों में पेंशन नहीं थी वहां कर्मी को उसके द्वारा प्रतिमाह दिया प्रोविडेंट फण्ड और उतना ही अंशदान सरकारी जुड़ता रहता था जिस पर नियमानुसार ब्याज जुड़ता रहता था और सेवा निवृति पर कर्मी को पूरा प्रोविडेंट फण्ड दे दिया जाता था। इस पद्धति में अक्सर यह होता था कि कर्मी का पूरा धन घर के किसी कार्य में खर्च हो जाता था तत्पश्चात कर्मी और उसकी पत्नी को बेबस होकर जीना पड़ता था, बच्चे बहुधा माता-पिता से किसी बहाने पैसे खर्च करवा लिया करते और सामाजिक स्तर पर कर्मी बहुत कष्ट भोग कर मरता। कई तो विवश होकर आत्महत्या कर लेते, ऐसी स्तिथि में जिस व्यक्ति ने पेंशन की योजना सर्व प्रथम ईजाद कर लागू की हमें उसका शुक्रगुज़ार होना चाहिए।

नयी पेंशन के रचना कार के सोच को दाद देनी पडेगी कि उसने सभी पेंशन धारकों की जिंदगी को मटियामेट करने की ऐसी योजना बनाई जिसका लोग उस समय आंकलन नहीं कर सके। केंद्र सरकार में ऐसे अनेक वित्त मंत्री हुए जिन्होंने बजट से लेकर अन्य योजनाएं लागू की जो बाद में निवेशकर्ताओं को ले डूबी। ऐसी एक योजना थी यू एस 64, जिसमें सरकार ने दखल देकर लोगों का कुछ धन वापिस करवाया था, मैं भी उस योजना का एक छोटा भुक्तभोगी हूँ।

नयी पेंशन के रचना कार के सोच को दाद देनी पड़ेगी कि उसने सभी पेंशन धारकों की जिंदगी को मटियामेट करने की ऐसी योजना बनाई जिसका लोग उस समय आंकलन नहीं कर सके। केंद्र सरकार में ऐसे अनेक वित्त मंत्री हुए जिन्होंने बजट से लेकर अन्य योजनाएं लागू की जो बाद में निवेशकर्ताओं को ले डूबी।

अभी चार-पांच वर्ष पहले मोदी जी ने नोट बंदी की थी, सुना गया था तब के एक विख्यात मंत्री ने दो कंटेनर जाली करेंसी नोट छपवा कर अपने वोटरों में बटवा दिए थे। मेरे पास इसका कोई सबूत नहीं है, ऐसी स्तिथि में धर पकढ़ या रेड से कुछ होना नहीं था क्योंकि जब पता चला तब तक राशि बट चुकी थी। मोदी जी संभवत: इस बात को छिपाकर आनन्-फानन में नोट बंदी कर दी। यही एक तरीका बचा था उन जाली नोटों को चलन में न आने देने का क्योंकि बाद में यह कहा गया कि रिज़र्व बैंक द्वारा जारी लगभग सभी नोट बापिस आ गए। अब वो जाली नोट बैंक में कैसे आते?

खैर, सरकार में ऐसे नाटकीय कार्य होते रहे हैं और जनता मूर्ख बनकर उसी पार्टी की सरकार को पुन: चुनती रही है। तो बात पेंशन की हो रही थी लिहाजा पुरानी पेंशन ही अभी तक सेवा निवृत कर्मिओं के लिए अनुकूल रही है और अभी है। इसमें महंगाई भत्ता आदि जुड़ते जाय तो कर्मी का जीवन संतोष से कट जाता है। राजस्थान सरकार ने पहल कर नयी पेंशन स्कीम 2004 को हटा कर पुरानी पेंशन स्कीम पिछले बजट में पास करा कर फिर से लागू कर दी। इसमें अभी तक यह स्पष्ट नहीं है कि 2004 और इस वर्ष घोषणा की तिथि की अवधि में पुरानी पेंशन लागू होगी अथवा नहीं? कुछ भी हो मुख्यमंत्री ने जो सदा सहता दिखाई है इस अवधि का भी वे कोई तोड़ निकाल इसे हल कर देंगे।

राज्य सरकार कई प्रकार की पेंशन लोगों को देती है परतु अभी उनमे विषमता विध्यमान है जैसे विश्वविद्यालयों के कर्मिओं को नियमित पेंशन न देना.... इसमें कुछ विश्वविद्यालय छात्रों की अधिक संख्या के कारण कर्मिओं को पेंशन देने में सक्षम हो सकते हैं लेकिन कुछ ही वर्षों में वे भी पेंशन देने में सक्षम नहीं होंगे। प्रदेश के सभी कृषि विश्वविद्यालय पेंशन की अनियमिता और अनिश्चितता से परेशान हैं। लगभग 12 वर्ष से कर्मी न्यायलय की शरण में जाकर कुछ राहत पा लेते हैं, अभी तक 13 माह की पेंशन फिर बाकी हो गयी जो नहीं दी गयी है। न्यायालय ने दखल देकर 22 माह की बाकी पेंशन घटवा कर 10 माह जनवरी 2022 में करवा दी थी जो अब फिर बढ़ कर 13 माह हो गयी, कब तक पेंशनर्स कोर्ट के फेरे लगाते रहेंगे?

मुख्य मंत्री जी का कहना है कि यदि सरकार इनको पेंशन देगी तो अन्य लोग भी डिमांड करेंगे। ये केसा कथन है? दूसरे कौन? निश्चित रूप से वे पाकिस्तानी नहीं होंगे और यदि देश के नागरिक डिमांड करते हैं तो उनकी समस्या भी सरकार को ही सुलझानी पडेगी। उत्तर प्रदेश राज्य अपने सभी सेवा निवृत कर्मिओं को पेंशन दो दशक से अधिक सालों से प्राइमरी से लेकर विश्वविद्यालय तक और वो भी सरकारी कोषालय से और सरकारी कर्मिओं की पेंशन समान सभी सरकारी और प्राइवेट विद्यालओं, विश्वविद्यालयों के कर्मिओं को दे रही है, वहां पेंशन धारकों की संख्या अपेक्षाकृत राजस्थान से कई गुना अधिक है। वहां किसी प्रकार का कोई विवाद आज तक नहीं सुना गया।

मुख्य मंत्री यदि विवेक से सोचे तो उनके एक निर्णय से प्रदेश के सभी विश्वविद्यालओं की पेंशन समस्या सुलझ सकती है। वे स्वयं कई प्रकार की वित्तीय सहायता/पेंशन लोगों को देते हैं, जिनका खुलासा करना यहाँ उचित नहीं। कृषि विश्विद्यालयों का स्थापना खर्च सरकार ने स्वयं बढ़ाया जो प्रतिवर्ष 10 से 12 करोड़ बैठता है। एक कृषि विश्व विद्यालय उत्तर में बीकानेर था दक्षिण में 1999 में उदयपुर ने बन गया, फिर जोधपुर, जोबनेर और कोटा में तीन और कृषि विश्वविद्यालय स्थापित कर संख्या पांच कर दी। इनका औचित्य क्या था? समझ से परे है। उदयपुर के समान यदि बाकि तीनो के लिए सम्बाद भी करवाते तो हो सकता था एक केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय बन जाता, और सरकार अनेकों खर्चों से बच जाती। लेकिन जब बात वोट बैंक की हो तो उस स्तिथि में लेख में कोई बात लिखना करना उचित नहीं मानता।

पेंशन पेमेंट के लिए एक संस्था गठित की जावे जिसमे केंद्र, प्रदेश व अन्य अपनी साझेदारी से उसमे अंशदान कर फण्ड निर्मित कर उससे सभी को पेंशन समान रूप से समान नियमों के तहत दी जा सके। सरकार से यह जिम्मेदारी अलग होनी चाहिए, भले ही सरकारी तंत्र से संचालित हो। अभी भी समय है प्रदेश का एक कृषि विश्वविद्यालय केंद्र के अधीन कर दिया जावे इसी प्रकार अन्य विषयों के विश्वविद्यालय भी यूनिवर्सिटी ग्रांट कमीशन, सी एस आई आर केन्द्रीय उपक्रमों को सौंप कर वित्तीय भार से कुछ निजात पाई जा सकती है। कृषि विश्व विद्यालय से सम्बंधित और भी ऐसे सुझाव हो सकते हैं जिनसे वित्तीय भार कम किया जा सके। इन सबके बावजूद पेंशन पर सम्बाद/आंदोलन होते रहने चाहिए लेकिन ऐसे आंदोलन रचनात्मक हों और सरकार से तालमेल रख ही निर्णय होकर लागू हों किसी कवि ने कहा है **''जेते पैर पसारिये जित्ती लम्बी सौर''**। सरकार अपने खर्चे भी कम करके पेंशन फण्ड में योगदान कर सकती है, वर्तमान स्तिथिओं में भी में ऐसे कई सुझाव दे सकता हूँ जिससे चार-पांच करोड़ की बचत हो सकती है।

–अतिथि सम्पादक,
प्रो.डॉ. वीर बहादुर सिंह,
(पूर्व कुलपति एवं डेयरीविज्ञ महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी वि.वि., उदयपुर)

अब कांग्रेस में पैराशूट से नहीं उतरेंगे नेता, पार्टी में पांच साल काम करने वालों को ही टिकट मिलेगा : अजय माकन

उदयपुर, (का.स.)। झीलों की नगरी में शुक्रवार से कांग्रेस के नवसंकल्प चिंतन शिविर का आगाज हो चुका है। गांधी परिवार के तीनों प्रमुख सदस्यों के साथ तमाम कांग्रेस के नेता उदयपुर पहुंच चुके हैं।

उदयपुर में कांग्रेस के चिंतन शिविर में कांग्रेस महासचिव व राजस्थान के प्रभारी अजय माकन ने पत्रकार वार्ता को संबोधित किया।

- **कांग्रेस का इंटरनल पब्लिक इनसाइड डिपार्टमेंट होगा जिसमें लोग जनता के बीच से फीडबैक लेंगे।**
- **कांग्रेस पार्टी के ढांचे में अब बूथ लेवल से लेकर ऊपर तक बदलाव किया जा रहा है**

शिविर के पहले दिन शुक्रवार को कांग्रेस के महासचिव व राजस्थान प्रभारी अजय माकन ने प्रेस कांफ्रेंस में बताया कि शिविर के बाद कांग्रेस पार्टी के ढांचे में आमूलचूल परिवर्तन होने जा रहा है। उन्होंने एक परिवार एक टिकट के फार्मूले के जवाब में कहा कि यह बात तय है। किसी भी नेता का रिश्तेदार, बेटा या बेटी को टिकट तभी मिलेगा जब वह पांच साल पार्टी में काम करेगा। यानी पैराशूट से कोई नेता नहीं उतारा जाएगा।

होटल अरावली ताज में कांग्रेस नेता अजय माकन ने बताया कि संगठन को लेकर बने कांग्रेस के पैनल ने पार्टी में आमूलचूल परिवर्तन के लिए सुझाव दिए हैं। उन पर चर्चा की जा रही है। उन्होंने बताया कि कांग्रेस पार्टी के ढांचे में अब तक वही पद चले आ रहे थे जो सालों पहले थे। लेकिन अब उसमें बूथ लेवल से लेकर ऊपर तक बदलाव किया जा रहा है। कुछ चीजें हमारे संविधान में पहले से थी, लेकिन उनको अमल में नहीं लाया जा सका।

उन्होंने कहा कि भाजपा की तरह ही अब कांग्रेस में भी मंडलों का गठन किया जाएगा। हर पंद्रह बीस बूथों पर एक मंडल होगा। तीन से चार मंडलों पर एक ब्लॉक का गठन किया जाएगा। इसके गठन के लिए भी एक प्रक्रिया अपनाई जाएगी। माकन ने बताया कि अक्सर चुनाव के समय ही हम कुछ प्राइवेट एजेंसी से सर्वे करवाते रहे हैं। लेकिन अब तय किया गया है कि कांग्रेस का इंटरनल पब्लिक इनसाइड डिपार्टमेंट होगा। इस डिपार्टमेंट में शामिल लोग लगातार जनता के बीच फीडबैक लेंगे। उन जनता किन मुद्दों पर क्या चर्चा कर रही है। माकन ने बताया कि यह बात भी सामने आई है कि जो कार्यकर्ता अच्छा काम कर रहे हैं, उनको रिवार्ड नहीं दिया जाता है और जो काम नहीं कर रहे हैं या खराब काम कर रहे हैं, उन्हें सजा नहीं मिलती है। इसको लेकर कांग्रेस में असेस्टमेंट विंग बनाने का सुझाव है। यह विंग तय करेगी कि कौन कार्यकर्ता बेहतर काम कर रहा है और उसका क्या रिवॉर्ड देना चाहिए? जो लोग खराब काम या पार्टी के विरोध में काम करेंगे, उन्हें सजा का प्रावधान किया जाएगा। कांग्रेस के नेता माकन ने कहा कि हम पार्टी में अनुशासन को और मजबूत करेंगे। इसके लिए हर स्तर पर अनुशासन कमेटी बनेगी। शिविर में इस पर चर्चा की जाएगी।

माकन ने बताया कि चिंतन शिविर में जो कमेटियां गठित की गई है, उनमें पचास प्रतिशत लोग 50 साल से कम उम्र के हैं। आगे भी इसको लागू रखा जाएगा कोई भी व्यक्ति पांच साल से अधिक किसी एक पद पर नहीं रह सकेगा। इन पदाधिकारियों को अपनी परफार्मेंस देनी होगी। अच्छा काम नहीं करने पर उन्हें तीन साल तक पद से मुक्त रखा जाएगा। पार्टी में काम करने पर आगे मौका दिया जाएगा। यही हमारे नवसंकल्प होंगे।

सांभर के वार्ड 22 में चार पेयजल लाइन होने के बाद भी पानी को तरसते लोग

सांभरझील, (निसं)। यहां के वार्ड-22 में जलदाय विभाग की कई दशकों पुरानी चार पेयजल लाईन बिछी होने के बावजूद चारभुजा गली के बांशिदों को एक एक बूंद पानी के लिये मशक्कत करनी पड़ रही है लेकिन लोगों व पार्षद की ओर से कई दफा शिकायत किये जाने के बावजूद स्थानीय जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के अभियन्ताओं की ओर से इस ज्वलन्त समस्या को हल्के में लिया जा रहा है। बताया जा रहा है कि यहां उपभोक्ताओं को खुद की आवश्यकता की पूर्ति के लिये निजी टेंकर मंगवाये जाने के अलावा दूसरा कोई विकल्प ही नहीं बचा है।

- **लोगों को हर माह निजी टेंकरों और जलदाय विभाग के बिलों का भुगतान भी करना पड़ रहा है**
- **नयी पेयजल लाईन बिछाने का काम दलगत राजनिती के चलते अमल में नहीं आ सका**

जबकि यहां के उपभोक्ताओं से जलदाय विभाग पानी के बिल की पूरी राशि वसूल कर रहा है। प्राप्त जानकारी के अनुसार पुरानी कोर्ट के पास पानी इतना कम प्रेशर से लोगों के घरों में पहुंच रहा है कि रोजमर्रा की जिंदगी के लिये वह पर्याप्त नहीं बताया जा रहा है, महज बीस मिनट की पेयजल सप्लाई ही होना बताया जा रहा है, जबकि विभाग उपभोक्ताओं से औसत के आधार पर बिल राशि वसूल कर विभाग उपभोक्ताओं के अधिकारों का हनन कर रहा है। यहां के लोगों से बात करने पर बताया गया कि माह में कम से कम दो टेंकर पानी के मंगवाने ही पड़ते हैं, लेकिन उन लोगों को अधिक मुश्किल हो रही है जिनकें घरों में पानी स्टोर करने के लिये या तो होद नहीं है या जगह के अभाव में बहुत ही छोटे है। एक दफा यहां पर पुरानी कोर्ट के पास ऊंचाई वाले स्थान पर पेयजल टंकी बनवाकर नयी पेयजल लाईन बिछाने का लोगों को करीब तीन चार साल पहले ख्वाब दिखाया गया था, लेकिन दलगत राजनीती के चलते न तो इस योजना पर विभाग अमल कर सका और न ही सरकारी कारिंदों ने इस दिशा में कोई रूचि दिखायी।

यहां की कांग्रेस पार्षद ज्योति कुमावत से बात करने पर बताया गया कि उनकी तरफ से विभाग को एक से अधिक पत्र लिखे जा चुके हैं, विभाग की ओर से कोई सुनवायी नहीं की गयी है तो अब जलदाय मंत्री को लिखा गया है, यहां के लोगों को आज भी उम्मीद बनी हुयी है कि सरकार इस दिशा में कोई न कोई समाधान जरूर निकालेगी।

डॉ. महेन्द्र भानावत को मारवाड़ रत्न सम्मान

उदयपुर, (कासं)। लोककला संस्कृतिविज्ञ डॉ. महेन्द्र भानावत को जोधपुर स्थापना दिवस पर गुरूवार को गजसिंह द्वारा मारवाड रत्न कोमल कोठारी सम्मान प्रदान किया गया। राष्ट्रीय स्तर का इक्यावन हजार का यह सम्मान डॉ. भानावत को उनके द्वारा विभिन्न प्रान्तों की कलाधर्मी जातियों, लोकानुरंजनकारी प्रवृत्तियों, जनजातीय सरोकारों तथा कठपुतली, पड, कावड जैसी विधाओं पर खोजपूर्ण लेखन एवं शोध के उन्नयन में दीर्घकालीन उच्चस्तरीय योगदान के उपलक्ष्य में प्रदान किया गया।

संस्कृतिविज्ञ डॉ. महेन्द्र भानावत को गजसिंह ने मारवाड रत्न कमल कोठरी सम्मान प्रदान किया।

समारोह के दौरान गजसिंह ने पूर्व काल तथा आजादी के बाद जनसेवा के उल्लेखनीय योगदान का जिक्र करते हुए मेहरानगढ म्युजियम ट्रस्ट द्वारा अगले वर्ष से राजाराम मेघवाल पुरस्कार देने की भी घोषणा की। समारोह में विशिष्ट अतिथि प्रो. संजीव मिश्रा ने कहा कि मेहरानगढ के सूरजवंशी सूर्यनगरी जोधपुर ने रक्त की बजाय शकुन दिया है। मुख्य अतिथि सव्यसांची मुखर्जी ने जोधपुरी भाषा, संस्कृति तथा परम्परा को देश की संस्कृति की पहचान कहा। सम्मान समिति के प्रो. जहूर खां मेहर ने कहा कि देश के लिए विभिन्न क्षेत्रों में जो महानुभाव अपने कर्त्तव्य की साधना और पुरुषार्थ में लगे हुए हैं उनकी पहचान कर उनके स्मरणीय योगदान का सम्मान अन्यों को भी प्रेरणा और शकुन देता है।

देश की जनता का ध्रुवीकरण कर भाजपा जनता को भय व चिंता में रहने को मजबूर कर रही है : सोनिया गांधी

उदयपुर, (कासं)। उदयपुर में कांग्रेस के 'नवसंकल्प चिंतन शिविर' का आगाज शुक्रवार को कांग्रेस राष्ट्रीध्यक्ष सोनिया गांधी की उपस्थिति में हुआ। इस दौरान राहुल गांधी, प्रियंका गांधी सहित कई कांग्रेस के वरिष्ठ नेता भी उपस्थित थे।

इस अवसर पर अपने संबोधन में सोनिया गांधी ने कहा कि यहां जो हमारा चिंतन शिविर हो रहा है, उसका प्रसंग है 'नव संकल्प'। यह हम सबको एक अवसर देता है, जहां हम सब विचार-विमर्श करें उन तमाम चुनौतियों पर जो भाजपा की नीतियों और आरएसएस से जुड़ी संस्थाओं की गतिविधियों के चलते, आज देश के सामने है। हम विमर्श करें अपने आगे के रास्ते पर। यह एक तरह से न केवल राष्ट्रीय मुद्दों पर एक चिंतन है, बल्कि एक आत्म-चिंतन भी है।

कांग्रेस के 'नवसंकल्प चिंतन शिविर' को राष्ट्रीय अध्यक्ष सोनिया गांधी ने सम्बोधित किया।

- **उदयपुर में कांग्रेस के 'नवसंकल्प चिंतन शिविर' का राष्ट्रीय अध्यक्ष सोनिया गांधी की उपस्थिति में आगाज**

उन्होंने कहा कि मैं जानती हूं, हमारे साथी यहां आना चाहते थे। इस चिंतन शिविर में भाग लेने चाहते थे लेकिन कई कारणों से हमें संख्या को सीमित रखना पड़ा। मुझे पूरा भरोसा है कि वे इस बात को समझेंगे । संगठन को मजबूत बनाने में उनका योगदान किसी से भी कम नहीं है।

सोनिया गांधी ने कहा कि भाजपा की केन्द्र सरकार देश में निरंतर ध्रुवीकरण कर लोगों को चिंता, भय और असुरक्षा के माहौल में जीने को मजबूर कर रही है। अल्पसंख्यक जो हमारे गणतंत्र के बराबर के नागरिक हैं, जो हमारे समाज के अटूट अंग है, उन्हें जान-बूझकर निशाना बनाना और उन पर क्रूरता से हमला करना, समाज में युगों से चली आ रही विविधता का दुरूपयोग करके उसे बांटना और समाज में बड़ी सावधानी से पालन-पोषण किए गये अनेकता में एकता के सिद्धांत को तबाह करना, अपने राजनीतिक विरोधियों को डराना-धमकाना , उनकी छवि को नुकसान पहुंचाना, उन्हें झूठे बहानों से जेल में डालना और उनके खिलाफ जांच एजेंसियों का गलत इस्तेमाल करना, तमाम लोकतांत्रिक संस्थाओं की स्वतंत्रता और निष्पक्षता के साथ खिलवाड़ करना, इतिहास के नाम पर थोक में झूठ परोसना और हमारे महान नेताओं विशेष तौर पर जवाहरलाल नेहरू को बदनाम करना, उनके योगदान, उपलब्धियों और बलिदानों को एक सोची समझी रणनीति के तहत नीचा दिखाना या उनका खंडन करना, महात्मा गांधी के हत्यारों और उनके वैचारिक पथ प्रदर्शकों का महिमा मंडल करना, देश के संविधान के सिद्धांतों, आदर्शों और उसके चार स्तम्भ- न्याय, स्वतंत्रता, समानता व भाईचारे का खुलकर उल्लंघन करना आदि शामिल है।

सोनिया ने कहा कि हर संगठन की तरह हमें सुधारों की सख्त जरूरत है : रणनीति में बदलाव, ढांचागत सुधार और रोजाना काम करने के तरीके में परिवर्तन। एक तरह से यह सबसे बुनियादी मुद्दा है लेकिन मैं यह भी जोर देकर कहना चाहती हूं कि हमारा पुनरूत्थान सिर्फ एक विशाल सामूहिक प्रयासों से ही हो पाएगा और वो विशाल सामूहिक प्रयास न टाले जा सकते है न ही टाले जाएंगे।

सोनिया गांधी ने अपने संबोधन में सभी से आग्रह किया कि वे अपने विचारों को खुलकर रखें मगर, बाहर सिर्फ संगठन की मजबूती, दृढ निश्चय और एकता का संदेश ही जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि हाल में मिली नाकामबियों से हम बेखबर नहीं है। न ही हम बेखबर है उस संघर्ष से या उस संघर्ष की कठिनाइयों से, जिसे हमें करना है और जीतना है। लोगों की हमसे जो उम्मीदें है, उनसे हम अनजान नहीं है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

शनिवार 14 मई, 2022

वैशाख मास, शुक्ल पक्ष, त्रयोदशी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2079, चित्रा नक्षत्र सांय 5:28 तक, सिद्धि योग दिन 12:58 तक, तैतिल करण दिन 3:23 तक, चन्द्रमा आज प्रात: 6:12 पर तुला राशि में प्रवेश करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मेष, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-कुम्भ, बुध-वृष, गुरू-मीन, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

सर्वार्थ सिद्धि योग सांय 5:28 से सूर्योदय तक है। रवियोग सांय 5:20 से आरम्भ होगा। आज ज्येष्ठा संक्रान्ति, सूर्य का वृष में प्रवेश रविवार प्रात: 5:30 से होगा। पूण्यकाल रविवार को है। आज श्री नृसिंह जयन्ती और व्रत है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:24 से 9:03 तक, चर 12:23 से 2:03 तक, लाभ-अमृत 2:03 से 5:23 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 5:44, सूर्यास्त 7:02

मेष
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

वृष
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। परिचितों चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। दिनचर्या में सुधार होगा। मन का भय समाप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
परिवार में आपसी सहयोग बढ़ेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

सिंह
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। नये-पुराने मित्रों से मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

तुला
व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

वृश्चिक
धार्मिक कार्यों में धन खर्च हो सकता है। अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

धनु
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में विवादों से राहत मिल सकती है। अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मकर
व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कुंभ
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। आर्थिक मामलों में प्रगति होगी। धन प्राप्त होगा।

मीन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। आवश्यक कार्यों यात्रा टालना ठीक रहेगा। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।